

## विचार बिन्दु

दोष निकालना सुगम है, उसे अच्छा करना कठिन। -प्लूटार्क

## शहरी हरियाली में मृत्यु दर घटाने का रहस्य छुपा है

यजुर्वेद संहिता का एक सूत्र है: हरितसमुच्चयः शुभहृतेरुषः, स्वस्थशरीरमनसश्चशान्तिम्। विनाशयत्याशुगदांस्तथाः, सुजलयुं दीर्घायामुत्तमम्। तालयं यह है कि हरियाली का विस्तार शूभ का कारण है। यह शरीर को स्वस्थ बनाती है और मन को शांति प्रदान करती है। यह शीघ्र ही रोगों और अन्य कष्टों को नष्ट करती है और दीर्घायु तथा समृद्धि को उत्पन्न करती है। आज की चर्चा इसके वैज्ञानिक विश्लेषण पर है। कभी आपने सोचा है कि हमारे आसपास के हरे-परे पेड़, पार्क और हरियाली हमें कैसे जिंदा रख सकते हैं? यह कहानी एक ऐसे सफर की है जहाँ विज्ञान और प्रकृति के बीच की अनेकों डोरों ने मानव जीवन को न केवल लंबा किया है, बल्कि इसे शांत और स्वस्थ भी बनाया है। कल्याण कौजिए, एक ऐसा दिन जब शहरों में हरियाली का नामो-निशान मिट चुका हो। हर तरफ केवल कंक्रीट का जंगल, धूल, धुआँ और बेचैनी। यही तो आधुनिक शहरीकरण की सच्चाई है, जहाँ हरियाली कम होती जा रही है। लेकिन विज्ञान ने हमें बताया है कि यह कहानी किसी ज़ासदी की ओर बढ़ सकती है। शोध बताते हैं कि जो लोग हरियाली के पास रहते हैं, उनकी मृत्यु दर कम होती है। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु के बीच की कहानी है। एक बूढ़ी महिला को कहानी लीजिए, जो शहरी कोलाहल में अपने घर की छिड़की से केवल कंक्रीट को इमारतों देखती है। वह अकेली रहती है, उसका स्वास्थ्य खराब है और वह अक्सर अस्पताल जाती है। लेकिन एक दिन, उसकी बेटी उसे अपने घर में ले जाती है, जहाँ छिड़की के बाहर एक बड़ा बाग़ाच है। कुछ महीनों में, उसकी मानसिक स्थिति में सुधार होता है, उसकी हदय गति सामान्य हो जाती है और वह पहले से बेहतर महसूस करने लगती है। यह कहानी केवल भावनात्मक नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक है। अध्ययन बताते हैं कि हरियाली हृदय संबंधी बीमारियों, मानसिक तनाव और श्वसन तंत्र पर अद्भुत प्रभाव डालती है।

हरियाली का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह सामुदायिक स्तर पर भी लाभकारी है। जरा सोचिए, एक ऐसा इलाका जहाँ हरियाली की कमी हो, वहाँ अपराध दर अधिक होती है। लेकिन जैसे ही एक पार्क का निर्माण होता है, बच्चों के लिए खेलने की जगह मिलती है, वयस्कों के लिए टहलने के रास्ते बनते हैं, क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आने लगते हैं। यह केवल एक सामाजिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य और कल्याण का विस्तार है। क्या हरियाली के बिना भी जीवन संभव है? वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो नहीं। चीन में एक अनेखा अध्ययन बताता है कि अत्यधिक ठंड या गर्मी से होने वाली मौतों को हरियाली नाटकीय रूप से कम कर सकती है। यह शोध स्पष्ट करता है कि हरियाली केवल सौंदर्य का स्रोत नहीं है, बल्कि यह जीवन रक्षक भी है। हरियाली केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक शांति और दीर्घायु का आधार भी बन सकती है।

दक्षिण एशियाई देशों में हरियाली के महत्व को समझना और भी आवश्यक हो जाता है। शहरीकरण के कारण हरियाली के क्षेत्र सीमित हो गए हैं, जिससे शारीरिक गतिविधियों में कमी और संबंधित बीमारियों, जैसे मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप, में वृद्धि हुई है। हरियाली को उपयोगी बनाने के लिए डिजाइन में सुधार आवश्यक है। उदाहरण के लिए, महिलाओं और बच्चों के लिए सुरक्षित और सुलभ पार्क बनाना, जहाँ वे बिना किसी डर के टहल सकें।

कम आय वाले और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए हरियाली का सकारात्मक प्रभाव अधिक होता है। गरीब और वंचित समुदाय, जिनके पास स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य संसाधनों तक सीमित पहुँच होती है, हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। यह न केवल स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने में मदद करता है, बल्कि सामाजिक समानता को बढ़ावा देने का भी एक प्रभावी साधन है।

क्या आप जानते हैं कि ब्लू स्पेस (जैसे तालाब, झील) का भी स्वास्थ्य पर प्रभाव हो सकता है? वू और ग्रीन स्पेस का सम्मिलित प्रभाव श्वसन और कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों से होने वाली मृत्यु दर को कम कर सकता है। शोध स्पष्ट करता है कि पानी और हरियाली के बीच का यह जुड़ाव हमारी सेहत के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

अब जरा एक छोटे लडके की कल्पना करें, जो बड़े शहर में हरियाली के बिना पला-बढ़ा है। उसकी श्वसन समस्याएं बढ़ जाती हैं, और वह अक्सर अस्पताल जाता है। लेकिन जब वह एक गाँव में अपने दादा-दादी के पास जाता है, जहाँ हर तरफ पेड़ और खेत हैं, तो उसका स्वास्थ्य बेहतर हो जाता है। यह सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि हकीकत है। अध्ययनों ने दिखाया है कि हरियाली केवल बीमारी को रोकने का साधन नहीं है, बल्कि यह पुनर्वास और उपचार का भी एक प्रभावी माध्यम हो सकती है।

नीचे प्रस्तुत शोध के आंकड़े और उनके निष्कर्षों में हरियाली और स्वास्थ्य के बीच संबंधों पर व्यापक और समग्र विवरण देखा जा सकता है।

अल्फानो और साथियों (Environmental Research: 216, 2023) ने 538 नमूनों पर अध्ययन किया। उन्होंने गर्भावस्था के दौरान माताओं के हरियाली के संपर्क का नवजात शिशुओं के डीएनए मिथाइलेशन पर प्रभाव देखा। 147 डिफरेंशियल मिथाइलेटिड क्षेत्र की पहचान की गई, जिनमें से 85 क्षेत्रों ने प्रदूषण, सड़क की दूरी, शहरीकरण और पड़ोस की आय जैसे कारकों के बावजूद भी महत्वपूर्ण परिणाम दिखाए। यह अध्ययन हरियाली और आनुवंशिक प्रभावों के बीच संबंध को रेखांकित करता है।

कामी-बर्नल और साथियों (Health and Place: 82, 2023) ने हरियाली और टाइप-2 मधुमेह के बीच संबंध पर 13 कोहोर्ट अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें 1,700 से 19,22,545 प्रतिभागी शामिल थे। उन्होंने पाया कि जिन व्यक्तियों को अधिक हरियाली का संपर्क मिला, उनमें टाइप-2 मधुमेह की घटनाएं कम थीं। डिमाकोपूलू और साथियों (Frontiers in Epidemiology, 3,2023) ने यूरोप के नौ देशों में 204 मिलियन व्यक्ति-वर्ष और 3.1 मिलियन मौतों के आंकड़ों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि पी.एम.2.5, नाइट्रोजन के ऑक्साइड और ब्लैक कार्बन के संपर्क से मृत्यु दर बढ़ती है, लेकिन हरियाली का उच्च स्तर इन नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकता है। लियू और साथियों (Environmental Pollution, 301,2022) ने 53 अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें 18 देशों के 100 मिलियन व्यक्ति शामिल थे। उनका मेटा-विश्लेषण दिखाता है कि एनडीवीआई (हरियाली का माप) में 0.1 की वृद्धि से कार्डियोवैस्कुलर मृत्यु दर में 2-3 प्रतिशत की कमी होती है। अधिकारी और साथियों (The Lancet Planetary Health, 4, 135-136, 2020) ने दक्षिण एशिया के संदर्भ में हरियाली और स्वास्थ्य का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि शहरीकरण के कारण हरियाली की कमी मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों को बढ़ाती है। उन्होंने सुझाव दिया कि हरियाली के डिजाइन और उनकी उपलब्धता में सुधार के लिए नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता है। बर्टौ और साथियों (Public Health, 200:91-98, 2021) ने 13 एक्सपोजर-रिस्पॉन्स फंक्शन का उपयोग किया और निष्कर्ष निकाला कि एनडीवीआई में 0.1 की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर के जोड़िम अनुपात को 0.96 तक कम कर सकती है। कुआ और ली (Perspectives in Public Health, 141: 342-353, 2021) ने 20 अध्ययनों (133,363 प्रतिभागी और 202 मिलियन व्यक्ति) का विश्लेषण किया और पाया कि हरियाली का अधिक संपर्क सामान्य मृत्यु दर को 3 प्रतिशत तक कम कर सकता है। झों और साथियों (Sustainable Cities and Society, 116,2024) ने 21 अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि वू और ग्रीन स्पेस का संयुक्त प्रभाव श्वसन और हृदय संबंधी मृत्यु दर को कम करता है। ही और साथियों (Science of the Total Environment, 851, 2022) ने 138,749 स्ट्रोक से संबंधित मौतों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि हरियाली ने टंड और गर्मी से संबंधित स्ट्रोक मृत्यु दर को कम किया। उच्च एनडीवीआई नैविशेष रूप से गर्मी के प्रभाव को कम करने में सहायता करती। रिगोनेन और साथियों (International Journal of Environmental Research and Public Health, 18: 1-29, 2021) ने 90 अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि गरीब और वंचित समुदाय हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। हरियाली एक समुदायों में स्वास्थ्य असमानताओं को कम करती है। रॉज-एण्डा और साथियों (The Lancet Planetary Health, 3:e469-e477, 2019) ने 8.3 मिलियन प्रतिभागियों पर नौ अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि एनडीवीआई में 0.1 की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर को 4 प्रतिशत तक कम कर सकती है। स्मिथ और साथियों (Cities, 119, 2021) ने वू स्पेस के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए पाया कि वू स्पेस का संपर्क मोटापे और सामान्य मृत्यु दर में सुधार करता है। युआन और साथियों (Aging Clinical and Experimental Research, 33:1783-1797, 2021) ने बुजुर्ग व्यक्तियों पर हरियाली के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि हरियाली का संपर्क सामान्य और स्ट्रोक मृत्यु दर को कम करता है। इसी प्रकार जरे सखाविट इत्यादि (Science of the Total Environment, 838, 156180, 2022) द्वारा हरियाली और कैसर के संबंध पर 18 अध्ययनों का मेटा-विश्लेषण बताया है कि फेफड़ों और अन्य प्रकार के कैसर पर हरियाली के सकारात्मक प्रभाव के संकेत मिले।

इन शोधों ने हरियाली के व्यापक लाभों को दर्शाया है, जिसमें मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य सुधार और सामाजिक असमानताओं को कम करने की क्षमता शामिल है। यह स्पष्ट है कि हरियाली मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

लेकिन हम इस ज्ञान का उपयोग कैसे कर सकते हैं? व्यक्तिगत स्तर पर, हम अपने आस-पास अधिक से अधिक पौधे लगा सकते हैं। पड़ोस के पार्क में नियमित रूप से समय बिताना हमारे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। जैसा कि यजुर्वेद संहिता में कहा गया है:-- वनंप्रविशयप्रचलन्ति ये ते, धृतिंलभन्तेहृदये सदा वै। तनुः सुदुर्घामयमः प्रसादं, विद्यायस्वेव्यंश्रमप्रेत्येथाश्ना। तालयं यह है कि वन में प्रवेश करके जो लोग पैदल प्रणम करते हैं, वे सदा अपने हृदय में स्थिरता (धैर्य और शक्ति) प्राप्त करते हैं। उनका शरीर सुदृढ़ होता है और मन प्रसन्न हो जाता है। इस प्रकार, जो हम को सेवन करते हुए (वन में नियमित प्रणम करते हुए), शारीरिक और मानसिक दुखों और कष्टों को शांत किया जा सकता है।

बच्चों को प्रकृति के संपर्क में लाना, उन्हें पेड़ों और हरियाली के महत्व के बारे में सिखाना भी एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रशानन के लिए यह जरूरी है कि हरियाली को शहरी योजना का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। पार्क का निर्माण, सार्वजनिक स्थानों पर हरियाली बढ़ाना और वू-ग्रीन स्पेस का प्रबंधन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। इसके साथ ही, सामाजिक असमानता को ध्यान में रखते हुए ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए, जो गरीब और वंचित समुदायों के लिए अधिक सुलभ हों।

हरियाली का महत्व केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति, हमारे समाज और हमारे अस्तित्व का आधार है। यह हमें न केवल जिंदा रखती है, बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाती है। यह हमारे लिए है कि हम इस ज्ञान को अपनाएं और अपने जीवन में हरियाली को स्थान दें। आखिरकार, यह केवल पेड़ों और पौधों की बात नहीं है, यह हमारे जीवन की बात है। आइए, इसे संजोएं और संरक्षित करें।

-अतिथि सम्पादक,  
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,  
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)  
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

## धरातल से दूर - दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता-मिशन

मिशन के द्वारा वर्ष 2031 के अंत तक देश में दलहन उत्पादन को 350 लाख टन तक बढ़ाना तथा दलहन खेती के क्षेत्र में 10 लाख हेक्टर तक बढ़ोतरी का लक्ष्य निर्धारित किया गया



रामपाल जाट

‘न्यूनतम समर्थन मूल्य’ पर खरीद की सुनिश्चितता द्वारा किसानों को सशक्त बनाने एवं भारत में पोषण और आर्थिक सुरक्षा के लिए भारत सरकार ने नीति आयोग की 4 सितम्बर 2025 की अनुशंसा के अनुसार ‘दलहन उत्पादन आत्मनिर्भरता मिशन’ को 01 अक्टूबर 2025 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत किया गया। जिसे प्रधानमंत्री द्वारा 11 अक्टूबर 2025 को 11,440 करोड़ रुपये के बजटीय आवंटन के साथ आरंभ करने की घोषणा की गई। इसकी अवधि 2025-26 से लेकर 2030-31 तक 6 वर्ष की रकबी है।

इस मिशन का उद्देश्य धरतु दालों की मांग को पूर्ण करने, आयात पर निर्भरता कम करने, किसानों की आय में वृद्धि के माध्यम से रोजगार को बढ़ावा देने, खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ करने, फसल चक्र की निरंतरता से मृदा स्वास्थ्य के

द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में समृद्धि लाने तथा सतत दलहन उत्पादन में देश को वैश्विक नायक के रूप में स्थापित कर सम्रद्ध का निर्माण करना है।

विश्व में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और आयातक होने से देश में उत्पादकता और स्थिरता बढ़ाने की नीतियों का केंद्र बिंदु होना अपरिहार्य है। आर्थिक आवश्यकता के अतिरिक्त सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार की दिशा में भी यह महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन के द्वारा वर्ष 2031 के अंत तक देश में दलहन उत्पादन को 350 लाख टन तक बढ़ाना तथा दलहन खेती के क्षेत्र में 10 लाख हेक्टर तक बढ़ोतरी का लक्ष्य निर्धारित किया गया। मिशन के अंतर्गत 2 करोड़ किसानों को गारंटीकृत खरीद से लाभान्वित करने का उल्लेख किया है।

इसी दिशा में ‘मूल्य समर्थन योजना’ के अंतर्गत ‘मानक संचालन प्रक्रिया’ की मार्गदर्शिका तैयार की गई। जिसमें तुअर, उदुद, मसूर एवं चना खरीद के लिए भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ (नेफेड) और राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ (एनसीसीएफ) को दायित्व सौंपा गया।

सहकार समृद्धि पोर्टल पर दर्शाये गए संपूर्ण उत्पादन की खरीद का प्रावधान किया गया है। इसके अनुसार चना उत्पादक मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र में राज्यों की संस्थाओं के अतिरिक्त नेफेड एवं एनसीसीएफ द्वारा सीधी खरीद आरंभ है। इसमें गुजरात में 43, मध्य प्रदेश में 46,

महाराष्ट्र 55 खरीद केंद्र संचालित है। राजस्थान में अजमेर जिले के किशनगढ़ में एक ही खरीद केंद्र संचालित है। वहाँ भी जिन किसानों ने राजफैड में पंजीयन कराया एवं जिनकी 40 किंवाटल की सीमा तक खरीद हो चुकी है, उनको इस योजना से वंचित रखा जा रहा है।

राजफैड ने भी मूल संस्था नेफेड के आधार पर उसके अधिकारों के रूप में पंजीयन किए थे, वैधानिक रूप से उसका दायित्व भी मूल संस्था का ही होता है। यानि राजफैड द्वारा किए गए पंजीयन के आधार पर भी नेफेड द्वारा सीधी खरीद से मना करना इस योजना की भावना को कुचलने वाला है।

जिन किसानों से 40 किंवाटल से अधिक चना नहीं खरीदा जायेगा उन्हें अवशेष उत्पादित चना 775 रुपए प्रति किंवाटल तक का घाटा उठाकर बेचना पड़ेगा। इससे 140 किंवाटल चना उत्पादन करने वाले किसान को 100 किंवाटल चना 77,500 रूपये का घाटा उठाना पड़ेगा। राजस्थान के अनेक क्षेत्रों के किसान मृग एवं चना की फसल पर ही निर्भर करते हैं। यह उनके परिवार की जीविका का अवलंबन होने से पारिवारिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

भारत सरकार द्वारा दलहन उत्पादन में आत्म निर्भरता मिशन जैसी कल्याणकारी योजना के क्रियान्वयन का कर्तव्य राज्यों का है। राजस्थान या अन्य किसी भी राज्य द्वारा इस प्रकृति की नीति को निष्पक्षीय बनाया जाना ही दृष्टि से उचित नहीं है। वैसे भी भारत सरकार ने ‘न्यूनतम समर्थन मूल्य’ पर दलहन -

तिलहन की खरीद के लिए नेफेड को अधिकृत किया हुआ है, राजफैड जैसी राज्यों की संस्थाएँ तो उनके सहायक अथवा अधिकारों के रूप में ही कार्य करती हैं।

भारत सरकार ने मई 2014 में ‘मूल्य समर्थन योजना’ के अंतर्गत दलहन एवं तिलहन जैसी उपजों के राज्य के कुल उत्पादन में से 25 प्रतिशत से अधिक खरीद करने पर प्रतिबंध लगाया था, उसके बाद वर्ष 2018 से ‘छत्रक योजना’ के रूप में ‘प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान’ आरंभ किया, उसमें भी यह प्रतिबंध यथावत रखा गया। तब से ही देश के किसानों की ओर से इसका विरोध किया जा रहा है। इन दोनों योजनाओं का प्रयोजन दलहन एवं तिलहन उत्पादकों को प्रोत्साहित करना दर्शाया गया, इस प्रकार के प्रतिबंधों के प्रयोजन को समाप्त करने वाले हैं। ऐसे प्रतिबंधों को तो तत्काल समाप्त किया जाना चाहिए या किंतु ऐसे प्रतिबंधों को हटाने के लिए दलहन-तिलहन उत्पादक किसानों को 12 वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। भारत सरकार ने 31 अगस्त 2022 से अब तक धीमी गति से इन प्रतिबंधों को हटाने की कार्यवाही की है। चने पर प्रतिबंध को हटाने में 12 वर्ष का समय व्यतीत हुआ। 8 वर्ष तो सतत संघर्ष के साथ किसानों को राज्यों तथा केंद्र के प्रमुख शासन सचिवों सहित कृषि मंत्री, सहकारिता मंत्री, मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री तक निरंतर ज्ञापनों- वार्ताओं के माध्यम से अनुनय-विनय करना पड़ा है। तब मूल्य

समर्थन योजना के अंतर्गत मानक संचालन प्रक्रिया प्रभाव में आयी।

जब एक से अधिक विकल्प हो तो श्रेयस्कर विकल्प का चुनाव ही लोको कल्याणकारी है। किसानों की ओर से सात से अधिक वर्षों में सरकारों को सौंपे गए ज्ञापनों में उल्लिखित समस्याओं के समाधान के दिशा में मानक संचालन प्रक्रिया प्रभाव में आई है। यथा-पंजीयन निरंतर चालू रखने के साथ उसके एक से अधिक विकल्प उपलब्ध कराया जाना, एक दिन में एक किसान से खरीद की मात्रा तथा राज्य के कुल उत्पादन में 25 प्रतिशत से अधिक खरीद पर प्रतिबंधों को हटाने जाने जैसी पहल से चने की दाने-दाने की खरीद की सम्भावना बलवती हुई। वही पंजीयन की जटिल एवं लुट प्रसिद्ध प्रक्रिया को सरल बनाया गया है।

इस सफलता प्राप्ति के आनंदानुभव का अवसर राजस्थान जैसे राज्यों ने अवरोध उत्पन्न कर छीन लिया। किसानों को चने के घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य 5,875 रूपये प्रति किंवाटल प्राप्ति से वंचित कर उनके आर्थिक मेरुदंड पर प्रहार करने का पाप किया है। राजस्थान में इसकी अगवाई सहकारिता विभाग के स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री कर रहे हैं, जो मुख्यमंत्री की चुप्पी के बिना सम्भव नहीं है।

इस प्रकार दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता मिशन को धरातल से दूर कर दिया।

-रामपाल जाट, राष्ट्रीय अध्यक्ष किसान महापंचायत

## जब खाड़ी की रफ्तार धीमी पड़ती है, तो शेखावाटी पर असर पड़ता है



आसिफ उल्लाह खान

सीकर और झुंझुनू के सूखे गांवों में समृद्धि लंबे समय से स्थानीय कारखानों या खेती पर नहीं, बल्कि खाड़ी देशों के शहरों पर निर्भर रही है। दशकों से फतेहपुर जैसे कस्बों के लोग दुबई, दोहा और रियाद जैसे शहरों में मजदूर, ड्राइवर और तकनीशियन के रूप में काम करते आए हैं। वे जो पैसे

घर भेजते हैं, उसी से शेखावाटी के गांवों की अर्थव्यवस्था चलती रही है। लेकिन अब मध्य पूर्व में बढ़ता संकट इस सहारे को हिला रहा है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) की एक हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव के कारण लगभग 37 लाख नौकरियां खत्म हो सकती हैं। खाड़ी देश-जो खाड़ी समुद्र परियोजना (जी.सी.सी.) के तहत आते हैं-को भारी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ सकता है।

भारत के लिए यह बहुत बड़ी बात है। भारत को हर साल करीब 135 अरब डॉलर (करीब 11 लाख करोड़) की रकम विदेशों से मिलती है, जिसमें से लगभग 50 अरब डॉलर (करीब 4.1 लाख करोड़) सिर्फ खाड़ी देशों से आता है। राजस्थान पर अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा विदेशों से आने वाले पैसे पर निर्भर है। लगभग 50 प्रतिशत

प्रवासी राजस्थानी खाड़ी देशों में काम करते हैं। एक प्रवासी परिवार को साल में औसतन 54,000 (करीब 650) मिलते हैं। यह औसत (मीडियन) आंकड़ा है-कुछ परिवारों को इससे ज्यादा मिलता है, कुछ को कम-लेकिन यह दिखाता है कि यह पैसा गांवों के लिए कितना जरूरी है।

शेखावाटी-जिसमें सीकर, झुंझुनू और फतेहपुर आते हैं-में यह निर्भरता और ज्यादा है। यहां के अधिकतर लोग मजदूरी या छोटे काम करते हैं, खासकर निर्माण क्षेत्र में, और उनकी कमाई आमतौर पर 50,000 महीने से कम होती है। जो लोग 20,000 से 50,000 महीने कमाते हैं, वे उसमें से लगभग 30-60 प्रतिशत पैसा घर भेजते हैं। यानी हर महीने करीब 8,000 से 25,000 घर आता है, जो साल में लगभग 1 से 3 लाख होता है। गांवों में हजारों लोग विदेश में काम कर रहे हैं। इसलिए एक साधारण अनुमान के मुताबिक हर साल शेखावाटी में करीब

800 करोड़ से 8,000 करोड़ (करीब 100 मिलियन से 1 बिलियन) तक पैसा आता है।

सीकर के सामाजिक कार्यकर्ता और समुदाय के नेता अशफाक खमखानी कहते हैं कि यह संकट अब साफ दिखने लगा है। हालात बहुत गंभीर हो गए हैं। जो इलाका पहले हजारों लोगों को खाड़ी देशों में भेजता था, वहां अब बड़ी संख्या में लोग वापस लौट रहे हैं, खमखानी कहते हैं। उनके अनुसार सबसे ज्यादा असर निर्माण क्षेत्र में पर पड़ा है।

शेखावाटी के राजमिस्त्री बहुत अच्छे माने जाते हैं। लेकिन खाड़ी में निर्माण काम रुक गया है, इसलिए लोग वापस आ रहे हैं। जो अभी वहां हैं, वे भी एहतियात के तौर पर पैसे भेज रहे हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि कहीं उन्हें भी वापस न आना पड़े। वे बताते हैं कि निर्माण के अलावा कई लोग छोटे व्यवसाय जैसे किराना दुकान, चाय की दुकान और छोटे होटल भी चला रहे

थे। अब वे खर्च कम कर रहे हैं। जिनके पास दो-तीन दुकानें थीं, वे अब एक ही दुकान चला रहे हैं।

राजस्थान के गांवों में इसका असर साफ दिख रहा है। अब जब पैसे नहीं आ रहे हैं, तो लोगों की जिंदगी बहुत सादगी भरी हो गई है, खमखानी कहते हैं। अब शांतिवादी सदागी से हो रही है। पहले शांतिवादी और खर्च कम हो गया है। नए पक्के मकानों का निर्माण लगभग रुक गया है और पुराने घरों की मरम्मत भी पैसे की कमी के कारण नहीं हो पा रही है। असल में शेखावाटी की पूरी अर्थव्यवस्था विदेश से आने वाले पैसे पर टिकी हुई है। अब जब खाड़ी देशों की रफ्तार धीमी पड़ रही है, तो यह व्यवस्था दवाब में आ गई है। खाड़ी में जो होता है, वह अब वहां तक सीमित नहीं रहता। उसका असर राजस्थान के आम लोगों की जिंदगी पर साफ दिख रहा है।

आसिफ उल्लाह खान, वरिष्ठ प्रचार

## मां : वह एक शब्द, जिसमें समाया पूरा ब्रह्मांड



श्वेता यादव

कभी आपने सोचा है, दुनिया का सबसे पहला शब्द क्या है? पापा नहीं, 10 मई, 1908 को पहली बार माँ

लव भी नहीं। असल में वो धीमी, कोमल आवाज है - माँ - इसमें वो जादू है, जिसने पत्थर को भी पिघलाया है। इस रविवार, को पूरी दुनिया मातृ दिवस मना रही है, लेकिन असली बात ये है - क्या सिर्फ एक दिन काफी है उसके लिए, जिसने जन्म दिया? चलिए, आज इसी उत्सव को सुलझाते हैं। वो पहली मुलाकात, जो कोई नहीं भूलता - ये कहानी शुरू होती है 1908 में, अमेरिका से। अन्ना जार्विस नाम की एक बेटो अपनी माँ को इतना प्यार करती थी कि उसकी माँ के बाद उसने पूरी दुनिया को एक दिन को नाम करने की ठान ली। 10 मई, 1908 को पहली बार माँ

के लिए फूल खिले, लोगों ने उन्हें गले लगाया और तब से ये सिलसिला चल निकला। पर ये तो हुई पश्चिमी बात, अब आते हैं अपने घर - हिंदुस्तान। यहाँ तो हर दिन मातृ दिवस है - भारत में माँ को सिर्फ अम्मा या मम्मी नहीं कहा जाता। यहाँ तो माँ दुर्गा बनती हैं, जिनकी दल भुजाएँ हैं - एक में तलवार, तो एक में आशीर्वाद। हम नवरात्रि में नौ दिन तक उनकी आराधना करते हैं। हमारे यहाँ पिंटोरी अमावस्या और माता तीर्थ औसी जैसे त्योहार हैं, जहाँ माँ के चरणों में सारा स्वर्ग - योछावर कर दिया जाता है। अंग्रेजों ने हमें अलगाया, पर माँ के प्रति हमारी निष्ठा कभी नहीं बदली।

बॉलीवुड से लेकर चाय की कुल्हड़ तक - सोचिए, जब माँ शब्द सुनते हैं, तो क्या खयाल आता है? क्या वो फिलिम मद्र इंडिया की निर्जला है? या कभी खुशी कभी गम की नंदिनी? असल में, माँ वो है जो सुबह चार बजे उठकर आपके लिए पराठे बनाए, और फिर शाम को आपके मोबाइल पर चिल्लाए - “आग लगे तेरे फोन में, जब देखो बस उसमें लगे रहते हो!”

वो डायलॉग को आपको गुस्सा दिलाता है, वही असल में प्यार का सबसे सच्चा सर्टिफिकेट है। ‘खाना खा लिया?’ - ये तीन शब्द कितनी रातों की नींद उड़ा देते हैं, ये तो वो माँ ही जाने। आखिर क्यों जरूरी है ये दिन? -

क्योंकि ये दिन हमें याद दिलाता है कि माँ कोई सुपर हीरो नहीं है। वो एक सामान्य इंसान है, जिसने अपने सपने आपसे पहले आपके लिए कुर्बान कर दिए वो डाल है, जो दुनिया के हर थपड़ को अपनी छाती पर झेल लेती है। तो इस रविवार, बिना रात, बिना किसी बहाने के बस उनकी आँखों में देखिए और कहिए - “थैंक यू, माँ। भले ही वो जवाब में डांट दें, आप जानते हैं, वो डांट भी आपके नाम ही लिखी है। क्योंकि एक दिन जब वो नहीं होंगी, तो वो आग लगे तेरे फोन में भी सबसे प्यारा गाना लगेगा।

हैप्पी मर्सेस डे - सिर्फ एक दिन नहीं, बल्कि एक एहसास।

-श्वेता यादव

## राशिफल रविवार 10 मई, 2026



पंडित अनिल शर्मा

प्रथम ज्येष्ठ मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2083, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 12:50 तक, ब्रह्म योग रात्रि 2:09 तक, कौलव करण दिन 3:07 तक, चन्द्रमा दिन 12:13 से कुम्भ राशि में संचार करेगा। ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरु-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह आज त्रिलोकनाथ अष्टमी है। पंचक दिन 12:13 से आरम्भ होगा। आज मर्दस डे है। श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:25 से 9:05 तक, लाभ-अमृत 9:05 से 12:23 तक, शुभ 2:02 से 3:42 तक। राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:46, सूर्यास्त 7:00

**मेष** अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज आपको अपने प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है।

**वृष** नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफल रहेंगे। आय में वृद्धि होगी।

**मिथुन** चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

**कर्क** परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यार्ध परचत अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**सिंह** अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य शीघ्रता/सुगमता से सम्पन्न हो सकते हैं। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

**कन्या** परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

**तुला** परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

**वृश्चिक** परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

**धनु** आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**मकर** मानसिक तनाव दूर होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

**कुंभ** आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। परिचितों से वाद-विवाद हो सकते हैं। घर-गृहस्थ